

**Motor Vehicle Act, 1988**

**मोटर यान अधिनियम, 1988**

# अध्याय-11

मोटर यानों का पर-व्यक्ति जोखिम बीमा

## CHAPTER XI

INSURANCE OF MOTOR VEHICLES AGAINST

THIRD PARTY RISKS

145. परिभाषाएं—इस अध्याय में—

(क).....

(ख).....

(ग).....

(घ).....

(ङ) “सम्पत्ति” के अन्तर्गत मोटर यान में ले जाया जा रहा माल, सड़कें, पुल, पुलिया, काजवे, वृक्ष, स्तम्भ तथा मील के पत्थर भी हैं;

(च).....

(छ).....

**146. पर-व्यक्ति जोखिम बीमा के लिए आवश्यकता – (1)** कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थान में मोटर यान का उपयोग यात्री से भिन्न रूप में तभी करेगा या किसी अन्य व्यक्ति से तभी कराएगा या उसे करने देगा, जब यथास्थिति, उस व्यक्ति या उस अन्य व्यक्ति द्वारा उस यान के उपयोग के सम्बन्ध में ऐसी बीमा पॉलिसी प्रवृत्त है, जो इस अध्याय की अपेक्षाओं के अनुपालन में है, अन्यथा नहीं :

परन्तु यह कि ऐसा यान जो खतरनाक या जोखिमपूर्ण माल वहन कर रहा हो या वहन करने के काम में आता है उसके लिए लोक उत्तरदायित्व बीमा अधिनियम, 1991 (1991 का 6) के अधीन जारी बीमा पालिसी होना चाहिये ।

स्पष्टीकरण – केवल वेतन पाने वाले कर्मचारी के रूप में मोटर यान चलाने वाले व्यक्ति को उस समय जब उस यान के उपयोग के सम्बन्ध में ऐसी पालिसी प्रवृत्त नहीं है जैसी इस उपधारा द्वारा अपेक्षित है, उस उपधारा का उल्लंघन करने वाला तभी समझा जाएगा जब वह जानता हो या उसके पास यह विश्वास करने का कारण हो कि ऐसी कोई पालिसी प्रवृत्त नहीं है, अन्यथा नहीं।

(2).....

(3).....

**146. Necessity for insurance against third party risk.**— (1) No person shall use, except as a passenger, or cause or allow any other person to use, a motor vehicle in a public place, unless there is in force in relation to the use of the vehicle by that person or that other person, as the case may be, a policy of insurance complying with the requirements of this Chapter :

Provided that in the case of a vehicle carrying, or meant to carry, dangerous or hazardous goods, there shall also be a policy of insurance under the Public Liability Insurance Act, 1991 (6 of 1991).

Explanation.-A person driving a motor vehicle merely as a paid employee, while there is in force in relation to the use of the vehicle no such policy as is required by this subsection, shall not be deemed to act in contravention of the subsection unless he knows or has reason to believe that there is no such policy in force.

(2)-----

(3)-----

147. पालिसियों की अपेक्षाएँ तथा दायित्व की सीमाएँ— (1) इस अध्याय की अपेक्षाओं का अनुपालन करने के लिए बीमा पालिसी ऐसी होनी चाहिए, जो—

(क) ऐसे व्यक्ति द्वारा, जो प्राधिकृत बीमाकर्ता है दी गयी है; और

(ख) पालिसी में विनिर्दिष्ट व्यक्ति या वर्ग व्यक्तियों व्यक्तियों का उपधारा (2) में विनिर्दिष्ट विस्तार तक निम्नलिखित के लिए बीमा करती है, अर्थात्—

(i) उस यान का किसी सार्वजनिक स्थान में उपयोग करने से किसी व्यक्ति की मृत्यु या शारीरिक क्षति जिसमें माल का स्वामी या माल में ले जाए जाने वाला अधिकृत प्रतिनिधि होने अथवा **किसी पर-व्यक्ति की किसी सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने** की बाबत उसके द्वारा उपगत दायित्व;

(ii) उस यान का किसी सार्वजनिक स्थान में उपयोग करने से किसी सार्वजनिक सेवा यान के किसी यात्री की मृत्यु या शारीरिक क्षति;

परन्तु कोई पालिसी—

(i) उस पालिसी द्वारा बीमाकृत किसी व्यक्ति के कर्मचारी की उसके नियोजन से और उसके दौरान हुई मृत्यु के सम्बन्ध में अथवा ऐसे कर्मचारी की उसके नियोजन से और उसके दौरान हुई शारीरिक क्षति के सम्बन्ध में ऐसे दायित्व को पूरा करने के लिए अपेक्षित नहीं होगी, जो किसी ऐसे कर्मचारी की मृत्यु या उसकी शारीरिक क्षति की बाबत कर्मकार प्रतिकर अधिनियम 1923 ( 1923 का 8) के अधीन होने वाले दायित्व से भिन्न है जो,—

(क) यान चलाने में नियोजित है; या

(ख) सार्वजनिक सेवा यान की दशा में उस यान के कण्डक्टर के रूप में, अथवा उस यान पर टिकटों की जाँच करने में नियोजित है; या

(ग) माल वाहन की दशा में, उस यान में वहन किया जा रहा है।

(ii) किसी संविदात्मक दायित्व को पूरा करने के लिए अपेक्षित नहीं होगी।

स्पष्टीकरण – शंकाओं को दूर करने के लिए, यह घोषित किया जाता है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु या शारीरिक क्षति अथवा पर-व्यक्ति की किसी सम्पत्ति को नुकसान को इस बात के होते हुए भी कि जिस व्यक्ति की मृत्यु हुई है या जिसे क्षति पहुँची है या जिस सम्पत्ति को नुकसान पहुंचा है वह दुर्घटना के समय सार्वजनिक स्थान में नहीं था या थी, उस दशा में सार्वजनिक स्थान में यान के उपयोग में हुआ समझा जाएगा जबकि वह कार्य या लोप, जिसके परिणामस्वरूप दुर्घटना हुई, सार्वजनिक स्थान में हुआ था।

(2) उपधारा (1) के परन्तुक के अधीन रहते हुए, उपधारा (1) में निर्दिष्ट बीमा पालिसी के अन्तर्गत किसी दुर्घटना की बाबत उपगत कोई दायित्व निम्नलिखित सीमाओं तक होगा, अर्थात्—

(क) खण्ड (ख) में यथा उपबन्धित के सिवाय, उपगत दायित्व की रकम;

(ख) पर—व्यक्ति की किसी सम्पत्ति को हुए नुकसान की बाबत छह हजार रूपये की सीमा:

परन्तु इस अधिनियम के प्रारम्भ के ठीक पहले सीमित दायित्व वाली बीमा पालिसी जो प्रवृत्त है, ऐसे प्रारम्भ के पश्चात् चार मास की अवधि के लिए अथवा ऐसी पालिसी की समाप्ति की तारीख तक इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रभावी बनी रहेगी।

(3) इस अध्याय के प्रयोजनों के लिए पालिसी तब तक प्रभावी नहीं होगी, जब तक बीमाकर्ता द्वारा उस व्यक्ति के पक्ष में, जिसने पालिसी कराई है, बीमा-प्रमाणपत्र विहित प्ररूप में और किन्हीं शर्तों की, जिन पर वह पालिसी दी गयी है, तथा किन्हीं अन्य विहित बातों की, विहित विशिष्टियों सहित नहीं दे दिया जाता, और भिन्न-भिन्न मामलों के लिए भिन्न-भिन्न प्ररूप, विशिष्टियाँ और बातें विहित की जा सकेगी।

(4) जहां इस अध्याय या इसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबन्धों के अधीन बीमाकर्ता द्वारा दिए गए कवर नोट के पश्चात् बीमा पालिसी विहित समय के अन्दर नहीं भेज दी जाती वहां बीमाकर्ता कवर नोट की विधिमान्यता की अवधि की समाप्ति के सात दिन के अन्दर यह बात उस रजिस्ट्रीकर्ता प्राधिकारी को, जिसके अभिलेख में कवर नोट से सम्बन्धित यान रजिस्ट्रीकृत है अथवा ऐसे अन्य प्राधिकारी को, जो राज्य सरकार विहित करे, अधिसूचित करेगा।

(5) तत्समय प्रवृत्त किसी विधि में किसी बात के होते हुए भी, कोई बीमाकर्ता जो इस धारा के अधीन बीमा पालिसी देता है उस व्यक्ति की या उन वर्गों के व्यक्तियों की जो पालिसी में विनिर्दिष्ट हैं, किसी ऐसे दायित्व की बाबत क्षतिपूर्ति करने के लिए जिम्मेदार होगा जिसकी उस व्यक्ति या उन वर्गों के व्यक्तियों के मामले में पूर्ति के लिए वह पालिसी तात्पर्यित है।

**147. Requirements of policies and limits of liability.-** (1) In order to comply with the requirements of this Chapter, a policy of insurance must be a policy which-

(a) is issued by a person who is an authorised insurer, and

(b) insures the person or classes of persons specified in the policy to the extent specified in subsection(2)-

(i) against any liability which may be incurred by him in respect of the death of or bodily injury to any person, including owner of the goods or his authorised representative carried in the vehicle **or damage to any property of a third party** caused by or arising out of the use of the vehicle in a public place:

(ii) against the death of or bodily injury to any passenger of a public service vehicle caused by or arising out of the use of the vehicle in a public place:

Provided that a policy shall not be required-

(i) to cover liability in respect of the death, arising out of and in the course of his employment, of the employee of a person insured by the policy or in respect of bodily injury sustained by such an employee arising out of and in the course of his employment other than a liability arising under the Workmen's Compensation Act, 1923 (8 of 1923), in respect of the death of, or bodily injury to, any such employee-

(a) engaged in driving the vehicle, or

(b) if it is a public service vehicle engaged as conductor of the vehicle or in examining tickets on the vehicle, or

(c) if it is a goods carriage, being carried in the vehicle, or

(ii) to cover any contractual liability.

Explanation. For the removal of doubts, it is hereby declared that the death of or bodily injury to any person or damage to any property of a third party shall be deemed to have been caused by or to have arisen out of, the use of a vehicle in a public place notwithstanding that the person who is dead or injured or the property which is damaged was not in a public place at the time of the accident, if the act or omission which led to the accident occurred in a public place.

(2) Subject to the proviso to sub-section (1), a policy of insurance referred to in sub-section (1), shall cover any liability incurred in respect of any accident, up to the following limits, namely:-

Provided that any policy of insurance issued with any limited liability and in force, immediately before the commencement of this Act, shall continue to be effective for a period of four months after such commencement or till the date of expiry of such policy whichever is earlier.

(3) A policy shall be of no effect for the purposes of this Chapter unless and until there is issued by the insurer in favour of the person by whom the policy is effected a certificate of insurance in the prescribed form and containing the prescribed particulars of any condition subject to which the policy is issued and of any other prescribed matters; and different forms, particulars and matters may be prescribed in different cases.

(4) Where a cover note issued by the insurer under the provisions of this Chapter of the rules made thereunder is not followed by a policy of insurance within the prescribed time, the insurer shall, within seven days of the expiry of the period of the validity of the cover note, notify the fact to the registering authority in whose records the vehicle to which the cover note relates has been registered or to such other authority as the State Government may prescribe.

(5) Notwithstanding anything contained in any law for the time being in force, an insurer issuing a policy of insurance under this Section shall be liable to indemnify the person or classes of persons specified in the policy in respect of any liability which the policy purports to cover in the case of that person or those classes of persons.

**M/S. COMPLETE INSULATIONS (P) LTD.**

**VS.**

**NEW INDIA ASSURANCE COMPANY LTD.**

**AIR 1996 SC 586**

It was observed by the Hon'ble Appex Court that-

“There can be no doubt that the said chapter provides for compulsory insurance of vehicles to cover third party risks. Section 146 forbids the use of a vehicle in a public place unless there is in force in relation to the use of that vehicle a policy of insurance complying with the requirements of that chapter. Any breach of this provision may attract penal action. In the case of property, the coverage extends to property of a third party i.e. a person other than the insured. This is clear from Section 1470b.

Countinue.....

(i) which clearly refers to 'damage to any property of a third party and not damage to the property of the insured himself. And the limit of liability fixed for damage to property of a third party is rupees six thousand only as pointed out earlier. That is why even the claims Tribunal constituted under Section 165 is invested with jurisdiction to adjudicate upon claims for compensation in respect of accidents involving death of or bodily injury to persons arising out of the use of motor vehicles, or damage to any property of a third party so arising, or both.

Countinue.....

Here also it is restricted to damage to third party property and not the property of the insured. Thus, the entire chapter XI of the New Act concerns third party risks only. It is, therefore, obvious that insurance is compulsory only in respect of third party risks since Section 146 prohibits the use of a motor vehicle in a public place unless there is in relation thereto a policy of insurance complying with the requirements of Chapter XI.

Continue.....

Thus, the requirements of that chapter are in relation to third party risks only and hence the fiction of Section 157 of the New Act must be limited thereto. The certificate of insurance to be issued in the prescribed form (See Form 51 prescribed under Rule 141 of the Central Motor Vehicles Rules, 1989) must, therefore, relate to third party risks. Since the provisions under the New Act and the Old Act in this behalf are substantially the same in relation to liability in regard to third parties, the National Consumer Disputes Redressal

Continue.....

Commission was right in the view it took based on the decision in **Kondaih's case** because the transferee-insured could not be said to be a third party qua the vehicle in question. It is only in respect of third party risks that Section 157 of the New Act provides that the certificate of insurance together with the policy of insurance described therein "shall be deemed to have been transferred in favour of the person to whom the motor vehicle is transferred".

Continue.....

**If the policy of insurance covers other risks as well, e.g., damage caused to the vehicle of the insured himself, that would be a matter falling outside Chapter XI of the New Act and in the realm of contract for which there must be an agreement between the insurer and the transferee, the former undertaking to cover the risk or damage to the vehicle. In the present case since there was no such agreement and since the insurer had not transferred the policy of insurance in relation thereto to the transferee, the insurer was not liable to make good the damage to the vehicle.”**



**Thank You!**